Prof N. Ram
Assitant professor
R.B.G.R college
maharajganj siwan

TDC Part I Economics (Hons)
Paper II Indian Economy
TOPIC Human Resources of India
भारत में मानवीय साधन
(Module (01)-structure of Indian economy)

मानवीय साधन अथवा जनसंख्या एवं आर्थिक विकास
(Human Resources or Population and Economics Growth)

किसी देश के आर्थिक विकास में जनसंख्या का बहुत बड़ा योगदान होता है। आर्थिक विकास मुख्यतः प्राकृतिक साधन – (Natural Resources तथा मानवीय साधन Human Resources पर निर्भर करता है। इन्ही दोनो साधनो के सहयोग से उत्पादन होता है। लेकिन प्राकृतिक साधन उत्पादन के निष्क्रिय साधन (Passive Resources) हैं जबकि मानवीय साधन उत्पादन के सक्रिय साधन (Active Resources) हैं। सक्रिय मानव साधन के सहयोग से ही प्राकृतिक साधनों का उत्पादन के लिए प्रयोग हो पाता है। इस प्रकार आर्थिक विकास में मानवीय साधन का ही अधिक महत्व है।

आर्थिक विकास के क्षेत्र में जनसंख्या के दो पहलु हैं। (1) संख्यात्मक (Quantitative) तथा (2) गुणात्मक (Qualitative) आर्थिक विकास के लिए किसी देश की जनसंख्या का संख्या एवं गुण में पर्याप्त होना आवश्यक है। यदि किसी देश में प्राकृतिक साधनो की प्रचुरता हो लेकिन उनका उपयोग करने के लिए पर्याप्त जनसंख्या न हो तो वहाँ आर्थिक विकास नही होगा। इस प्रकार देश में प्राकृतिक साधन तथा जनसंख्या दोनो पर्याप्त मात्रा में हो लेकिन जनसंख्या गुण से हीन हो अर्थात कार्यशील एवं कुशल जनसंख्या की कमी हो तब भी आर्थिक विकास नही हो सकेगा। इस प्रकार आर्थिक विकास के लिए जनसंख्या संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनो दृष्टिकोण से पर्याप्त होनी चाहिए। लेकिन आवश्यकता से अधिक जनसंख्या भी आर्थिक विकास के मार्ग में बाधक होती है। यही स्थिति आजकल भारत में है। जनसंख्या की अधिकता से प्राकृतिक साधनो पर लोगो की भीड़ बढ़ जाती है तथा उत्पादन पर्याप्त नही हो पाता। जो उत्पादन होता भी है वह समाप्त हो जाता है तथा बचत (saving) बहुत कम होती है। बचत की कमी से पूँजी निर्माण (capital formation) नही होता जिससे उत्पादन में कमी होती है। और आर्थिक विकास पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

इसी प्रकार जनसंख्या में अत्यधिक कमी देश के आर्थिक विकास के लिए इसी प्रकार बाधक होती है जिस प्रकार जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि। दुसरे शब्दों में अल्प जनसंख्या (under Population) अथवा जनाभाव तथा जनाधिक्य (over Population) दोनों ही आर्थिक विकास के मार्ग में बाधक सिद्ध होते हैं। इसलिए प्रो० हिक्स (J R Hicks) ने कहा है " दोनों ही दिशाओं में संभावित खतरे हैं।" There are possible dangers in each direction) यहाँ ध्यान रखना चाहिए कि अल्प जनसंख्या एवं जनाधिक्य के खतरे अलग अलग कारणों से उत्पन्न होते हैं, यद्यपि दोनों के खतरे बहुत ही वास्तविक है। प्रो० हिक्स के अनुसार " अल्प जनसंख्या एवं जनाधिक्य के खतरे दोनों वास्तविक होते है यद्यपि वे अलग अलग कारणों से उत्पन्न होते हैं।" (The dangers of under population and over population are the both real dangers though they arise form different causes जहाँ जनाधिक्य से प्राकृतिक एवं अन्य साधनों पर लोगों की भीड़ बढ़ जाती है और उत्पादन पर्याप्त नहीं हो पाता वहीं जनाभाव के कारण प्राकृतिक साधनों के समुचित उपयोग के लिए श्रम शक्ति का अभाव हो जाता है। अतः किसी देश में पर्याप्त एवं आदर्श जनसंख्या ही उस देश के आर्थिक विकास की गति तीव्र करने में सहायक हो सकती है।

यदि किसी क्षेत्र की अबादी आवश्यकता से भी कम है तो जनसंख्या में वृद्धि वहाँ के आर्थिक विकास में सहायक होती है क्योंकि इससे कृषि एवं उद्योगों में काम करने के लिए अधिक श्रमशक्ति उपलब्ध हो जाती है। कृषि एवं उद्योग में लगे श्रमिकों को जब आय प्राप्त होती है तो विभिन्न वस्तुओं के लिए उनकी माँग बढ़ जाती है जिससे उत्पादन को और अधिक प्रोत्साहन मिलता है। इससे बचत एवं पूंजी निर्माण को बढ़ावा मिलता है। और श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण भी सम्भव हो पाते है जिससे आर्थिक विकास की गति तीव्र होती है। इस प्रकार जनसंख्या आर्थिक विकास को प्रभावित करती है।

लेकिन आर्थिक विकास का प्रभाव भी जनसंख्या पर पड़ता है आर्थिक विकास की गति तीव्र होने से लोगों के प्रति व्यक्ति आय अधिक होती है और उनके रहन सहन ऊँचा उठने लगता है। आर्थिक विकास के प्रथम-चरण में तो इससे जनसंख्या में वृद्धि होती है लेकिन जब दीर्घकाल मे आर्थिक विकास के फलस्वरूप लोगों का जीवन स्तर काफी ऊँचा उठ जाता है तो वे छोटे परिवार की आवश्यकता समझने लगते है जिससे जन्म दर में कमी होती है तथा जनसंख्या में वृद्धि रुक जाती है। ऐसी अवस्था में जनसंख्या प्रायः स्थिर हो जाती

End N·Ram